International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 09-08-2026, Accepted: 08-09-2026, Published: 23-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 447-448

प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन का अध्ययन

डॉ. बेबी रानी
सहायक प्राध्यापक, इस्लमिया टीचर्स ट्रेनिंग (बी०एड०) कॉलेज, पटना, बिहार, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12326

सारांश
प्राचीन भारतीय समाज का स्वरूप सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के क्रमिक विकास का परिणाम था। प्रस्तुत आलेख में प्राचीन भारतीय समाज की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए वर्ण एवं जाति व्यवस्था, परिवार की संरचना, स्त्रियों की स्थिति, विवाह एवं उत्तराधिकार संबंधी मान्यताओं तथा सामाजिक जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। प्रारंभिक काल में सामाजिक व्यवस्था अपेक्षाकृत सरल एवं लचीली थी, किंतु समय के साथ वर्ण–व्यवस्था और सामाजिक नियम अधिक जटिल तथा कठोर होते गए। परिवार सामाजिक संगठन की आधारभूत इकाई था और सामाजिक जीवन में धार्मिक परंपराओं एवं रीति–रिवाजों का विशेष महत्त्व था।
आलेख में प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना के अंतर्गत कृषि, पशुपालन, शिल्प और व्यापार की भूमिका का भी विवेचन किया गया है। कृषि उत्पादन के विस्तार, विभिन्न व्यवसायों के विकास तथा विनियम और व्यापार ने समाज के आर्थिक आधार को सुदृढ़ किया। साथ ही बौद्ध एवं जैन परंपराओं सहित विभिन्न धार्मिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों ने तत्कालीन सामाजिक मान्यताओं को प्रभावित किया। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप सामाजिक जीवन में नए विचारों और मूल्यों का विकास हुआ। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन प्राचीन भारतीय समाज को एक स्थिर व्यवस्था के स्थान पर निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक संरचना के रूप में रेखांकित करता है, जिसमें परंपरा और परिवर्तन दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मुल शब्द: प्राचीन भारतीय समाज, सामाजिक संरचना, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, परिवार, स्त्रियों की स्थिति, कृषि एवं पशुपालन, धार्मिक परंपराएँ, बौद्ध धर्म, सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तावना
प्राचीन भारतीय समाज के प्राचीन खरोष्ठी अभिलेखों के अध्ययन से तत्कालीन समाज, धर्म, न्याय, नारी और दासों की प्रथा एवं दशा के साथ राजनैतिक व्यवस्था जो बहुत हद तक समीचीन और सही आकलन माना जा सकता है। ऐतिहासिक पक्ष को ध्यान में रखकर इसके संदर्भ में ही अन्य पुरातात्विक और साहित्यक स्रोतों से तुलना करने का प्रयास किये हैं। इतिहासकारों का विषय है कि यह शोध कहाँ तक आवश्यकता और उद्देश्यों की पूर्ति करता है।
जहाँ तक जनजीवन और संस्कृति का प्रश्न है। इसे हमेशा तत्कालीन भौगौलिक परिवेश के आलोक में अध्ययन करने पर ऐसा लगता है कि जैसे मध्य एशिया जिसे चीनी तुर्किस्तान का प्रदेश वास्तविक रूप से एक यायावरीय संस्कृति के रूप में किसी विस्तृत और सुरम्य चारागाह को ही दर्शाता है। [1] कुछ समय में विशेष परिस्थितियों के काल यूरोप, ईरान, युक्रेन पूर्व में चीनी तथा दक्षिण में भारतीय उपमहाद्वीप मे विस्तृत और विकसित हो रही प्राचीन संस्कृतियों के भावनायें और आवश्यकताओं, जिसमें धर्म का प्रचार, व्यापार और संस्कृति का मिलना इसे असमान्य बना दिया, जो दूसरी शताब्दी ई० पूर्व के बाद अत्यधिक विकास को प्राप्त हुआ। यह संस्कृति के मिलन बिन्दु के रूप में विकसित हुआ।
प्राचीन समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसका क्रमिक विकास थाप वर्ण व्यवस्था, परिवार और स्त्रियों की दशा आश्रम व्यवस्था, जिसमें शासन के अलावा समाज कृषकों और दासों में बँटा था। परिवार के मुखिया सर्वोपरि था। संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी। [2] पुत्रों को संपत्ति में अधिकार था लेकिन पुत्रियाँ संभवतः इससे वंचित थी और पुत्रों की तुलना में उन्हें कम अधिकार प्राप्त था। पुत्र को परिवार वंश का रक्षक माना जाता था। ऋगवैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा और उपनयन का अधिकार था, लेकिन मध्यकाल तक आते उनकी स्थिति में गिरावट आई। स्त्रियों का अधिकार और दशा इस बात का पुष्टि करता है कि अविवाहित बच्ची पिता या परिवार की सम्पति होती थी और इन्हे ऋणमुक्ति दान या बेचा जाता था। गोद लेने की प्रथा थी। लड़का या लड़की दोनों को गोद लिया जाता था। गोद लिये गये बच्ची को बेचा नहीं जा सकता था। जबकि परिवार के सम्पत्ति में लड़का और लड़की दोनों का पूरा अधिकार था। शादी के बाद संबंधों हेतु ऐसे दावें नहीं मिलते हैं। इसके बाद भी पारिवारिक विवाद न्यायालय तक जाते थे। समाज कृषकों, शिल्पियों एवं व्यापारियों के वर्ग में विभाजित था। लेकिन भारतीय वैदिक व्यवस्था की तरह किसी वर्ण व्यवस्था का पोषक नहीं था। दास प्रथा के अनेक उदाहरण मिलते है। दास बेचे और खरीदे जाते थे। [3] लेकिन दास रक्षा हेतु अने विधि नहीं थे। दासों के अधिकार सीमित थे। लेकिन फिर भी उनकी दशा तत्कालीन सभ्याताओं से अच्छा माना जा सकता है क्योंकि दास अपनी सम्पत्ति को बेच या खरीद सकते थे।
भौगौलिक दृष्टिकोण से व्यवसाय होता था। कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, आदि प्रमुख व्यवसाय थे। कृषि उत्पादों में चावल, जौ, गेहूँ, सब्जियाँ, फल आदि प्रमुख थे। पशुपालन में ऊँट, भेड़, बकरी, गाय, घोड़ा आदि पाये जाते है। [4] शराब का व्यापार ज्यादा होता था जबकि इसका मूल्य पूज्य अधिक था। रेशम उत्पादन का प्रमाण नहीं है फिर भी रेशमी वस्त्रों के उत्पादन, बनावट और कसीदाकारी उच्चकोटी के कलाकारों के द्वारा की जाती थी। रेशमी वस्त्रों के अलावा सूती वस्त्रों का व्यापार हो था। उससे देखते है कि व्यापारी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। शराब, ऊँट और घोड़े आदि व्यापारिक विनयम और विधिक साधन थे।
अनावृष्टि और ओलावृष्टि फसलों हेतु प्राकृतिक आपदा थे फिर भी सामान्य रूप से कृषि और व्यापार में गेहूँ, जो मिर्च, अदरख, पीपल, श्क्कर अंगुर आदि प्रमुख शहतुल और पटुआ, सन कपास की खेती होती थी। सामान्य रूप से बीजों और सिंचाई को महत्व

दिया जाता था। ऊन, चमड़े के वस्त्रों आदि भौगौलिक दृष्टि में वातावरण के अनुकूल और उपयोगी थी। [5]

सामाजिक रहन–सहन में मौखम के अनुसार लांग वस्त्र पहनाते थे। स्त्रियों कंचुसि अंतः वस्त्र और लबादा का प्रयोग करती थी। पहाड़ी टोपी, कमरबन्द आदि का प्रयोग करती थी। वही पुरूष पाजामा, कोट, जूते और लबादा का उपयोग करते थे। कालीन, गसीचे, रजाई आदि का प्रयोग किया करते थे।

धार्मिक मान्याताओं मे संभवतः तीसरी सदी ई०पू० में बौद्ध धर्म के प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं। बौद्ध धर्म अनेक संधाराय और आमजीवन में प्रचलित थी। लोग इसको धीरे–धीरे आत्मसात किये। बौद्ध भिक्षुओं को परिवार और दासों को रखने की ईजाजत थी यहाँ धर्म के सुत्रपात के साक्ष्य बौद्ध धर्म के रूप में हुआ। कठिन भौगोलिक परिस्थितयों में जनजीवन यापन की कठिनाइयों अलग विचार करने की ज्ञान और अध्यात्मक को दिशा में चिंतन को क्षीण करती व मध्य एशिया के लोगों को बौद्ध धर्म के रूप में एक सर्वग्रह्य आडंबरमुक्त मेदरहित धर्म प्राप्त हुआ जो बिना किसी दैनिक जीवन में बदलाव लाये चलता रहा। [6]

कुछ अभिलेख जैसे खरोष्ठी अभिलेख इस धारण की पुष्टि करता है कि उस समय समाज राजा, न्याय, राजतंत्र, कलाकार और कृषिक तथा व्यापारियों से पोषित कुशल राजतंत्र यहाँ की सभ्यता ने अनेक देशों की संस्कृति की अच्छी और सहज बातों को ग्रहण किया। यहाँ का राजा और राजतंत्र के निरंकुश या साम्राजय वृद्धि के प्रति ललक का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। आमजन का संतोषप्रद तथा न्यायप्रिय जीवन विताना वहॉ के भौगोलिक संरचना शान्ति और प्रकृति नियमों पर आधारित था।

भारतीय संस्कृति अपने योग्य ग्राह्य बनाकर ग्रहण किया था। यू कह सकते है कि भारतीय संस्कृति मध्य एशिया के परिवेश के अनुसार अपने मूल तत्वों के बदलाव के बिना तत्कालिक वाह्य रूप को बदलकर वहाँ के समाज, राजनीति, धर्म, न्याय, दास प्रथा नारी की अवसीय आदि विद्यालयों में समाहित होकर आत्मसात् हो गयी। यहाँ तक प्राचीन भारतीय संस्कृति से है वहाँ भी संस्कृति सर्वप्रथम उसी लिपि को ग्रहण किया जो उस समय सुदूर उत्तर पश्चिम की लिपी थी। खरोष्ठी लिपि भाषा प्राकृत होना इस बात का प्रमाण है कि वहाँ की संस्कृति में भारतीय भाषा को अपनाया वही जनजीवन के अन्य मुख्य आरोपों को भी अपनाया जिसमें समाज, राजनीति, धर्म, और न्याय व्यवस्था सम्मिलित थे। [7] विश्व की सबसे पुरातन मनुष्य के उद्गम स्थल को पुनः पूर्ण रूप से जानकर उसकी संस्कृति से प्राचीन विश्व के इतिहास को मध्य एशिया के परिप्रेक्ष्य में अनेक नये आयामों को उद्घाटित किया जा सकें और समझा जा सके।

संदर्भ सूची

1. राहुस सांकृत्यायन, बौद्ध संस्कृति पृष्ठ– 254
2. ए० स्आइन, एन्शियेट खोतान, भाग–1 पृष्ठ–188
3. बगची, पी०सी०, इंडिया एण्ड सेन्ट्रल एशिया, पृष्ठ–40
4. खरोष्टी इन्सिक्रमशन, पहला और दूसरा भाग
5. वरो सेग्वंज, इंट्रोडक्शन, पृष्ठ–2
6. दुबे ए०सी०, मानव और संस्कृति, दिल्ली 1860 पृष्ठ–6
7. डॉ० अविनाश कुरका, मध्यकालीन समाज, माकि आन्दोलन और निम्नकीत्य चेतनाः एक विमर्श, पटना 2017, पृष्ठ–24